भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयँ सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते।।

(ईशावास्योपनिषद् : १४)

जो अव्यक्त प्रकृति तथा हिरण्यगर्भ (विनाश) दोनों की साथ-साथ उपासना करता है, वह हिरण्यगर्भ की उपासना से मृत्यु को पार करके अव्यक्त प्रकृति की उपासना से अमरत्व प्राप्त कर लेता है।

नारी

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

विवाह एक अभिशाप तथा जीवन-भर की जेल है। यह सबसे बड़ा बन्धन है। एक अविवाहित जो कि वासना से परिपूर्ण है, वह सोचता है कि चूँकि उसकी कोई पत्नी नहीं है, इस कारण वह बड़ा ही दुर्भाग्यशाली है। जो अविवाहित अभी तक मुक्त था, उसे परिवार के जुए से बाँध दिया जाता है और उसके हाथ-पैरों में बेड़ियाँ डाल दी जाती हैं। किन्तु विवाह हो जाने के पश्चात् सभी विवाहितों का ऐसा ही अनुभव है। वे विवाह के पश्चात् विलाप करते हैं। बहुत से भिखारी कामवासना के कारण इस संसार में ला कर पटक दिये गये हैं। जो मानवीय कष्टों का परिमाण जानता है, वह कभी भी एक बच्चे को इस संसार में लाने की हिम्मत नहीं करेगा।

नारी निरन्तर दु:ख और क्लेश का स्रोत और महान् बन्धन है। एक मोहिनी स्त्री को प्रसन्न करने के लिए व्यक्ति को एक श्रेष्ठ और उत्कृष्ट लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार को नहीं त्यागना चाहिए।

पत्नी मात्र एक विलासिता है। यह कोई अनिवार्य आवश्यकता नहीं। प्रत्येक गृहस्थ विवाह के पश्चात् विलाप करता है। वह कहता है कि मेरा पुत्र टाइफाइड से मर रहा है। मुझे दूसरी पुत्री का विवाह करना है। मुझे ऋण चुकाना है। मेरी पत्नी मुझे स्वर्ण-हार खरीदने के लिए परेशान कर रही है। मेरी पत्नी के बड़े भैया की अभी कुछ दिनों पूर्व मृत्यु हो गयी है, आदि-आदि।

पत्नी अपने पति के जीवन को काटने के लिए तथा पति अपनी पत्नी के जीवन को काटने के लिए तेज धार वाले चाकू के समान है। आज अनसूया तथा सावित्री अत्यन्त दुर्लभ हैं। यदि पत्नी को स्वर्ण-हार तथा बनारसी साड़ी न मिले, तो वह पति पर चिल्लाती है और तेज पेटदर्द का बहाना करके बिस्तर पर लेटी रहती है। पति को समय पर भोजन नहीं मिलता। आप नित्य ही ऐसी दयनीय स्थिति स्वयं अपने अथवा अपने किसी मित्र के घर पर देख सकते हैं। वास्तव में मुझे और अधिक बताने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए शान्ति के साथ विवाह करें और वैराग्य-रूपी सुयोग्य पुत्र तथा विवेक-रूपी सुशील और गुणवान् पुत्री को प्राप्त करें और आत्मज्ञान के फल का रसास्वादन करें, जो आपको अमर बना सकता है।

जब आपकी पत्नी तरुणी और सुन्दर रहती है, तो आप उसके सुन्दर केश, गुलाबी गालों, सुन्दर नासिका, चमकीले दाँतों की प्रशंसा करते हैं; लेकिन जब किसी बीमारी के कारण वह अपना सौन्दर्य खो बैठती है, तो आपको उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं रहता, आप दूसरा विवाह कर लेते हैं। क्या आप अपनी पहली पत्नी से आत्म-भाव से प्रेम करते थे? क्या आप ऐसा समझते हैं कि जो आत्मा आपके भीतर है, वही आपकी पत्नी के भीतर भी है।

क्या आपका उसके प्रति प्रेम शुद्ध, नि:स्वार्थ और अपरिवर्तनीय है? जिस प्रकार आपको पुराने

चावल अथवा पुरानी मिश्री अधिक प्रिय है, उसी प्रकार आपकी पत्नी चाहे वृद्ध ही क्यों न हो गयी हो, आपको उससे अधिकाधिक प्रेम करना चाहिए; क्योंकि आपको आत्म-भाव के द्वारा ज्ञान प्राप्त हो गया है। मात्र ज्ञान ही प्रेम को तीव्र करता है और स्थायी बनाता है।

जो अपनी पत्नी, बच्चों तथा सम्पत्ति में अनुरक्त रहता है, उसे आध्यात्मिक पथ में तनिक भी लाभ नहीं होता। पत्नी, बच्चों तथा सम्पत्ति एवं विषयों के प्रति अविवेकपूर्ण आसक्ति के कारण आप अपनी अनिवार्य प्रकृति को भूल गये हैं। जब आपकी मृत्यु होगी, तो कोई भी आपके साथ नहीं जायेगा। मात्र आपके अच्छ-बुरे कर्म ही आपके साथ जायेंगे और भगवान् आपके कर्मों और उद्देश्यों के अनुसार न्याय करेंगे।

एक कामुक अविवाहित सदैव यह विचार करता है कि 'मैं कब अपनी तरुणी पत्नी के साथ रहूँगा?' एक वैरागी गृहस्थ सोचता है कि 'मैं कब अपनी पत्नी से अलग हो कर आत्मा पर ध्यान करूँगा?'

मन ही मात्र बन्धन और मुक्ति का कारण है। इस मन को मार दें और आत्मा में विश्राम करें। आप स्त्री के मनमौजीपन का खिलौना बन गये हैं। आप अनगिनत कामनाओं, भावनाओं और वासनाओं के दास बन गये हैं। आप इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से कब बाहर आयेंगे।

योगवासिष्ठ में लिखा हैह्नह्न''वे जो वर्तमान और भूतकाल में उपस्थित संसार के नाशवान् विषयों में उपस्थित आनन्द के अनस्तित्व का ज्ञान होते हुए भी उनमें उलझे रहते हैं, उनका विचार करते हैं और उनसे चिपके रहते हैं, वे गधे की उपाधि के योग्य हैं।''

(क्रमशः)

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

सूचना

कर्नाटक प्रान्तीय दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

दिव्य जीवन संघ की कर्नाटक राज्य की समस्त शाखाओं का सम्मेलन २८ दिसम्बर २००७ से ३० दिसम्बर २००७ तक श्री कुचलाम्बाल कल्याण महल, ब्लाक II, जयनगर, बेंगुलूरुह्नह्न५६००११ में हो रही है। इसमें भाग लेने का प्रतिनिधि शुल्क (भोजन सहित) ५०० रुपये है और आवास हेतु अतिरिक्त शुल्क ५०० रुपये है। अधिक जानकारी के लिए श्री एम. सतीश, सचिव, कर्नाटक राज्य दिव्य जीवन संघ समिति, ७१ चिक बाजार रोड, स्वामी शिवानन्दपुरम् (टास्कर टाउन), बेंगुलूरुह्नह्न५६००५२, कर्नाटक से सम्पर्क करें।

मो. नं. ०९४४८३ ८५५९२

ई मेल : dls.karnataka@rediffmail.com/dilasa2001@yahoo.co.in

सभी भक्तों से इसमें सम्मिलित होने की प्रार्थना है। **दिव्य जीवन संघ**

हमारे उपनिषदीय द्रष्टाओं का महानतम अन्वेषण

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस अनादि-अनन्त परम सत्ता को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं, जो सर्वत्र व्याप्त और सबके अन्तर्स्थित हैं, और जिनकी रहस्यमयी, अनिर्वचनीय अद्वितीय दिव्य शक्ति प्रत्येक पल असंख्य विश्व-ब्रह्माण्डों की सृष्टि, पालन और संहार करती रहती है, और उसकी वही अनुपम मायावी शक्ति मानो सर्वत्र अपने अज्ञान के आवरण अथवा भ्रम के आवरण से रचित समस्त प्राणियों को इस प्रकार आवृत्त किये रहती है कि वह रचयिता जो सबके मध्य प्रकाशित होने वाला है, जो उनके निकटतम से भी अधिक निकट है, जो सब वस्तु-पदार्थों से भी कहीं अधिक प्रिय है, जो इस विश्व में रचित अन्य किसी भी वस्तु से कहीं अधिक उनका अपना है, वह स्वयं उनसे ही अज्ञात रहता है।

अपने निकटतम होने पर भी हम उन्हें अनुभव नहीं कर पाते। सर्वत्र विद्यमान होने पर भी हम उन्हें जान नहीं पाते। यह अज्ञानता, ऐसी स्थिति, यह विचित्र असामान्य अनिर्वचनीय सूक्ष्म वस्तु-स्थिति का आध्यात्मिक नाम 'माया' है। इस 'माया' के कारण उस सदा विद्यमान को पहचाना नहीं जाता, सर्वदा सन्निकट को दूर माना जाता है, दुर्गम-दुःसाध्य समझा जाता है और जो सदा-सर्वदा प्राप्त है, उसी को हम ढूँढ़ते रहते हैं।

'वह', जिसकी सत्ता है, वह बस केवल एक वही हैह्नह्नएकमेव अद्वितीय ब्रह्म। केवल मात्र एक वही परम सत्ता, अद्वितीय, सदा विद्यमान, सर्वत्र विद्यमान और अनन्त है। उसके अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई है ही नहीं। बस, केवल एकमात्र वही है। जो-कुछ भी अन्य वस्तु, पदार्थ और प्राणी हैं, सब उसी में अन्तर्निहित हैं। उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

इसलिए यह 'माया' शब्द भी केवल एक नाम मात्र ही है जो उस परमात्मा की असाधारणता और अनिर्वचनीयता का वर्णन करने के लिए दिया गया है, जिसके द्वारा वह एकमेव अद्वितीय सर्वत्र विद्यमान होते हुए भी देखा अथवा अनुभव नहीं किया जाता । इस अधूरी अपूर्ण चेतना को 'माया' कहा गया है। यह और कुछ नहीं केवल स्वयं ब्रह्म से प्रकटित, उसी की प्रभा है जो उसकी चमक, उसकी देदीप्यमान वास्तविकता को छिपाये रखती है।

हमारे उपनिषदीय द्रष्टाओं और मनीषियों की यह महान् अन्वेषणा अत्यन्त सुसंगत और महत्त्वपूर्ण है कि वह मुमुक्षु-जिज्ञासु को बताते हैं कि समस्या उसके बाहर कहीं नहीं है। उसके पथ में बाहर से बाधा डालने वाला उससे भिन्न कुछ नहीं है। 'भगवान् और शैतान' अथवा 'अल्लाह और शैतान' नामक कोई द्विवर्गीकरण नहीं है। 'जेहोवा और डेविल' नाम के दो शाश्वत तत्त्व कुछ नहीं हैं। आपने अपने से बाहर किसी वस्तु से संघर्ष नहीं करना है, क्योंकि आपके बाहर आपके मोक्ष के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र नहीं रच रहा है।

जो-कुछ है, आपके भीतर है। सब समस्याएँ आपके भीतर उत्पन्न होती हैं। सभी समाधान आपको

अपने अन्तर में ही खोजने और लागू करने पड़ेंगे। सब-कुछ वहीं है। केवल अनुभव करें। अपनी आँखें खोलें और देखें। यह खोज व्यक्ति को निर्भीक बना देती है। आपको किसी शैतान से, किसी अनिष्टकारी शक्ति से, किसी अहितेच्छु से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं रहती, भले ही वह कितने भी शक्तिशाली क्यों न प्रतीत होते हों।

आपको भय से काँपना नहीं पड़ता। आपको भाग कर किसी अन्य शक्ति की शरण में जाने का प्रयास नहीं करना पड़ता। वस्तु-स्थितियों को किसी अन्य का कार्य, कोई पैशाचिक षड्यन्त्र, अथवा किसी भी ऐसी रहस्यमयी शक्ति का कार्य मानने की आवश्यकता नहीं रहती, जो भगवान् जैसी प्रतीत होती हो और जिसने समस्त प्राणियों को अपने शिकंजे में, अपनी दासता में दबा रखा हो।

वैदिक धर्म के अनुसार ऐसी धारणा अस्तित्व-हीन है। यहाँ तक कि धर्म एवं कलि-पुरुष की, धर्म की शक्ति और कलियुग के प्रभाव के द्विभाजीकरण की धारणा भी एक अस्थाई धारणा है, कार्य करने का एक अस्थायी ढंग, एक प्रारम्भिक रूप ही है। दैवी और आसुरी सम्पदा के रूप में द्विभागीकरण भी अस्थायी ही है।

अत: वे कहते हैंह्न''इस स्वप्न से जागें। आप कभी भी बद्ध नहीं हैं। आप कभी भी अपूर्ण अथवा दोषपूर्ण नहीं हैं। आप नित्य-शुद्ध, नित्य-बुद्ध, नित्य-मुक्त, नित्य-परिपूर्ण आनन्दमय आत्म-तत्त्व हैं।'' कैसी विस्मयजनक खोज है यह! कैसा निर्भीक और शक्तिशाली दृढ़ कथन है यह! कितना महान् सत्य है! यदि आप इस पर मनन करते हैं, तो प्रेरित हो जाते हैं, आह्लाद से भर जाते हैं आप! आप अत्यधिक आनन्दित हो उठते हैंह्न''मुझमें कोई अपूर्णता कैसे हो सकती है? मुझमें कोई दुर्गुण कैसे हो सकता है? मैं जो-कुछ हूँ, उसमें शत-प्रति-शत शुद्ध दिव्यता के अतिरिक्त अन्य कुछ भी कैसे हो सकता है? मैं सदैव मुक्त, सदा परिपूर्ण और नित्य-शुद्ध हूँ।''

इसे भली-भाँति समझ लेना और आत्मसात् कर लेना चाहिए। इसीलिए गुरुदेव का यह निर्भीक, सकारात्मक कथन हैह्न''आओ, आओ। मोक्ष, परिपूर्णता, आनन्द तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। अपनी बद्ध-अवस्था को अकारण ही दीर्घ क्यों कर रहे हो? अभी ही अपने जन्मसिद्ध अधिकार की माँग करो। अभी, इसी क्षण, फिर कभी किसी सुदूर भविष्य के दिन नहीं!'' इन निर्भीक शब्दों में, इस प्रेरणास्पद ढंग से गुरुदेव ने विस्मयकारी तथ्य को पुष्ट किया कि जो पहले से आपका ही है, उसे प्राप्त करने से कोई आपको रोक नहीं सकता।

इस धरती पर, इस विश्व-ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है, जो आपको, अपनी वास्तविकता में दृढ़ होने के, अपनी परिपूर्णता और परिशुद्धता में दृढ़ होने के मार्ग में बाधा बन सके। यह आपकी अपनी है। केवल आपको तन्द्रा से पीछा छुड़ाना होगा, नकारात्मकता से, निष्क्रियता से छुटकारा पा कर जाग्रत होना होगा, उठ कर खड़े होना होगा और निर्भीकता से अपने जन्मसिद्ध अधिकार को माँगना होगा तथा आप जो हैं, जो पहले से ही हैं, वही हो जाना होगा।

अत: अपने मन को ब्रह्म पर केन्द्रित करें। तब माया लुप्त हो जायेगी। जिस क्षण आप अपने मन को

ब्रह्म से हटा लेते हैं, आप माया से ग्रसित हो कर भ्रान्त हो जाते हैं। जीवात्मा की समस्त समस्याओं, कठिनाइयों और दुःखों से घिर जाते हैं। यह सब कष्ट इसलिए उत्पन्न हो जाते हैं, क्योंकि आप नित्य अन्तर्निरीक्षण के द्वारा सदा-विद्यमान वास्तविकता को जानने का प्रयत्न नहीं करते। हम अपने चतुर्दिक् के जगत् में इतने व्यस्त हैं कि हमें अपने अन्तर्मन के जगत् के लिए समय ही नहीं है। लगभग समस्त रूपान्तरण, नवजीवन का सम्पूर्ण प्रारम्भण आत्म-निरीक्षण, आत्म-परीक्षण से ही होता है। यदि ऐसा नहीं किया जाता, तब हम कभी भी कहीं भी नहीं पहुँचेंगे। समस्त साधना अन्ततः नकारात्मक विचारों को समाप्त करने के लिए मान कर, उन्हें 'कुछ भी नहीं' मान कर, रिक्त शून्यताएँ मान कर, त्याग देने के लिए ही है।

उच्चतम आह्वान, परम उपदेश जो दिया गया है, वह **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत'** हैह्लह्लउठो, जागो और प्रबोधन प्राप्त करो। यह अभी करें! परमात्मा के शरणागत हों! **'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते'** (जो केवल मेरी ही शरण हो जाते हैं, वह मेरी इस माया को तर जाते हैं)। और प्रार्थना करेंह्लह्ल

''हे अद्वितीय, हे सर्वोच्च अद्वय परमात्मा, अपने मुख से अपनी यह अनिर्वचनीय आवरणनीय शक्ति माया के आवरण को हटा दें, जिससे कि मैं आपको जान सकूँ।''

वह परमात्मा अपनी कृपा-वृष्टि करें और स्वयं को प्रकट करें, किसी सुदूर भविष्य में नहीं, अपितु अभी, यहीं, इसी क्षण! प्रेमस्वरूप, श्रद्धेय, करुणासिन्धु, गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी की अहैतुकी गुरु-कृपा आपके इस अन्वेषण में, इस आत्म-अन्वेषण में आपको सफलता प्रदान करे!

(अनु. श्रीमती सुधा भारद्वाज)

राजयोग का लक्ष्य

एक सार्वभौम तत्त्व है जिसे ब्रह्म, सर्वशक्तिमान्, यहोवा, अल्लाह, आहुरमज़्दा, स्वर्ग-पिता, ताओ अथवा भगवान् आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है। यही विश्वात्मा है, जिसकी वन्दना और पूजा मन्दिरों, समाजों, गिरजाघरों, मसजिदों, पारसियों के अग्नि-गृहों एवं अन्य सभी पूजा-गृहों में की जाती है। इस सार्वभौम आत्मा की महिमा एवं स्तुति वेद, तालमुड, तोराह, बाइबिल, कुरान, जेन्दावेस्ता आदि शास्त्रों में गायी गयी है। राजयोग में इसी विश्वात्मा को ध्याता का ध्येय-विषय कहा गया है। इस पूर्ण वैश्व सत्ता का ध्यान साधक को मन और बुद्धि की चेतना से ऊपर उठा कर परम चैतन्य की अवस्था में ले जाता है, जहाँ वह विषयों के बन्धन से मुक्त हो व्यावहारिक भौतिक सत्ता के प्राण-घातक क्लेशों से सदा के लिए छुटकारा पा लेता है। यही राजयोग का लक्ष्य है।

स्वामी चिदानन्द

बालकों के लिए दिव्य जीवन :

अच्छे जीवन से ईश्वरमय जीवन प्राप्त होता है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक बच्चो, पिछले कई दिनों से तुम सब कई नैतिक और आध्यात्मिक कहानियाँ सुनते रहे हो। आज मैं कुछ प्रश्न पूछ कर यह देखना चाहता हूँ कि तुम सही उत्तर दे सकते हो अथवा नहीं।

मोहन, किसी दु:खी या मुसीबत में पड़े हुए व्यक्ति की सहायता क्यों करनी चाहिए ?

मोहन इसलिए कि उससे हमारा चरित्र परिष्कृत होगा और दूसरा कारण यह है कि उसमें भी वही ईश्वर बसता है जो मुझमें है। मनुष्य की सेवा ईश्वर की सेवा है। परोपकार, दया और त्याग के कार्य करने से हमारा हृदय शुद्ध होता है, विशाल होता है और कोमल बनता है। इस प्रकार दिव्य प्रकाश ग्रहण करने योग्य बनता है।

शिक्षक बहुत सुन्दर। तुम्हारा उत्तर संक्षिप्त और मधुर है। इससे मुझे पूरा सन्तोष है। लेकिन यह बतलाओ कि त्याग के कार्य से तुम्हारा आशय क्या है?

मोहन जी, इसे परिभाषित करना कठिन है, लेकिन मैं अपनी आँखों देखी घटना से अपना आशय समझा सकता हूँ।

शिक्षक ठीक है, सुनाओ।

मोहन कल एक दुमंजिले मकान में आग लग गयी। घर की मालिकिन शाम का भोजन पकाने के बाद अपने बच्चों के साथ शयन-कक्ष में आराम कर रही थी। घर का मालिक घर पर नहीं था। चूल्हे के पास एक कपड़ा पड़ा था, संयोग से उसमें आग लग गयी। पास में ही पड़े लकड़ी के एक गट्ठर ने आग पकड़ ली और फिर सारे घर में आग फैल गयी। मालिकिन यह समझ कर कि सब ठीक-ठाक है, कमरे को अन्दर से बन्द करके निश्चिन्त हो कर सो गयी। इधर लपटें बहुत ऊँचे उठने लगीं। सारा मुहल्ला जाग गया। भीड़ जमा हो गयी। घर के मालिक को लोग आवाज दे रहे थे, पर कोई उत्तर नहीं मिल रहा था। बाहर का शोर-गुल सुन कर मालिकिन जागी और सारा घर धुएँ और लपटों से भरा देख कर घबरा उठी। बच्चों को उसने जगा दिया और घबराहट में उन्हें ले कर छत पर जा पहुँची। वहाँ से वह जोर-जोर से सहायता के लिए चिल्लाने लगी। लोग घड़ों और बालटियों में पानी ला-ला कर आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे। मालिकिन की हृदय-विदारक पुकार कोई नहीं सुन पा रहा था। इतने में पड़ोस का एक नवयुवक लकड़ी की एक सीढ़ी लाया और उससे छत पर पहुँच गया। फिर वह महिला तथा बच्चों को सुरक्षित नीचे उतार लाया।

इतने में दमकल आ गया और आग बुझाने लग गया। आग बुझाने में पूरे दो घण्टे लगे। सभी सामान राख बन चुका था। ईश्वर की कृपा से किसी की जान नहीं गयी।

घर की मालिकिन ने सन्तोष की साँस ली और अपनी हीरे की अँगूठी उतार कर उस प्राणरक्षक युवक

को उपहार के रूप में देने लगी। युवक ने उसे धन्यवाद दिया और वह अँगूठी वापस करते हुए कहा, ''हम बालचर हैं और हम लोग सेवा के बदले में कोई उपहार नहीं लेते। मैंने तो केवल अपना कर्तव्य निभाया है। इससे अधिक और कुछ नहीं किया।''

उस युवक की बहादुरी और निष्काम सेवा देख कर सब आश्चर्यचकित रह गये और उसकी प्रशंसा करने लगे; क्योंकि उसने अपने प्राणों को विपत्ति में डाल कर उस महिला और उसके बच्चों के प्राण बचाये थे।

शिक्षक बहुत अच्छा है। अपने प्राणों को जोखिम में डाल कर दूसरों के प्राण बचाना वास्तव में वीरतापूर्ण नि:स्वार्थ काम है और ऐसा काम ही त्याग का काम कहलाता है। उस भीड़ में से बहुत से लोगों ने पानी ला-ला कर आग बुझाने का प्रयत्न किया जरूर; लेकिन उस बालचर ने जिस हिम्मत और बहादुरी का काम किया, उसकी तुलना में उनका कार्य साधारण ही था।

इसके अतिरिक्त उसका एक दूसरा भी प्रशंसनीय कार्य रहा है।

गोपाल जी हाँ! उसने महिला द्वारा दिये गये हीरे की अँगूठी के उपहार को स्वीकार नहीं किया। उसने कर्तव्य के लिए कर्तव्य किया। वह सच्चा कर्मयोगी था।

शिक्षक बिलकुल ठीक। सत्कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। उससे चित्त शुद्ध होता है और ईश्वरीय कृपा और दिव्य प्रकाश की प्राप्ति होती है। अच्छाई से जीवन धन्य, सफल और समृद्ध बनता है।

भूखे को भोजन देना, रोगी की सेवा करना, नंगे को कपड़ा देना, गरीब और दीन की सहायता करना, अपने पास जो है उसे मिल-बाँट कर इस्तेमाल करना और बदले में कुछ भी न चाहनाह्नह्नये सब त्याग और नि:स्वार्थ सेवा के छोटे-छोटे कार्य हैं। सत्कार्य करने का कोई भी मौका चूकना नहीं चाहिए, इन्हें रोज करना चाहिए। तुम्हें स्वयं पता चल जायेगा कि इससे क्या-क्या लाभ हैं? तुम्हारा जीवन प्रेम, त्याग, ज्ञान और बहादुरी का जीवन्त उदाहरण होना चाहिए।

कृष्ण, बता सकते हो कि किसी की हत्या करना या किसी को चोट पहुँचाना क्यों बुरा है ?

कृष्ण क्योंकि उसका परिणाम अनर्थकारी है। वह हमें पशुता के स्तर पर लाता है। दूसरों को कष्ट देना अपने-आपको ही कष्ट देना है। जब हम दूसरों का उपकार करते हैं, तो हम अपना ही उपकार करते हैं। सब प्राणियों में एक ही आत्मा, एक ही ईश्वर बसता है।

शिक्षक वाह! तुम्हारा उत्तर भी वैसा ही है, जैसा कि मोहन का था। मुझे खुशी है कि इन दैनिक वार्तालापों से तुम लोगों ने लाभ उठाया है।

कृष्ण 'आत्म-त्यागी को सदा सम्मान मिलता रहा है', इस सत्य का प्रतिपादन करने वाली एक और कहानी सुनाऊँ गुरु जी?

शिक्षक हाँ, सुनाओ, लेकिन पाँच मिनट में ही।

कृष्ण जोधपुर के राणा की सेवा में एक राजपूत सेविका थी। उसका नाम पन्ना था। राजकुमार को छोड़ कर रानी मर गयी थी, इसलिए उस

स्वामी-भक्त महिला को राजकुमार की देख-भाल करने का भार सौंपा गया था। एक दिन राणा के शत्रुओं की टोली महल में घुस आयी। वे उस राजकुमार की तलाश कर रहे थे। वे उसे मार डालना चाहते थे। पन्ना ने फौरन अपने लड़के को राजकुमार के कपड़े पहना दिये और उसे राजकुमार की जगह महल में ले जा कर बैठा दिया।

शत्रुओं ने उस लड़के को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। वह अपने बच्चे का कतल होते देख रही थी, पर चिल्लायी नहीं। इस प्रकार अपने पुत्र की बलि दे कर उसने राजकुमार के प्राण बचाये। बहादुरी, स्वामी-भक्ति और आत्म-त्याग के गुणों के लिए उसकी याद हमेशा की जायेगी।

शिक्षक बहुत सुन्दर। यह एक सरल-सी छोटी कहानी है। उसने तो एक ऐसे त्याग का बढ़िया उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अब तक किसी महिला ने नहीं किया।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

पूर्व-अंक से आगे :

सर्वव्याप्त वैश्वानर

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

माण्डूक्योपनिषद् में आत्मा का इस जाग्रत अवस्था में, न केवल पिण्डाण्ड (microcosm) के दृष्टिकोण से प्रत्युत ब्रह्माण्ड (macrocosn) के दृष्टिकोण से भी विचार किया जा रहा है। अत: यह केवल निजी व्यक्तित्व का ही विश्लेषण नहीं है, यह व्यष्टि चेतना और समष्टि चेतना का संश्लेषण (संयोग) भी है। कम-से-कम उपनिषद् के दृष्टिकोण से व्यक्ति और सार्वभौम, जीव और ईश्वर, पिण्डाण्ड और ब्रह्माण्ड में असंयोज्य रन्ध्र (खाई) नहीं है। इसलिए जाग्रत अवस्था के अध्ययन में माण्डूक्योपनिषद् हमारे और जगत् के मध्य, जीव और ईश्वर के मध्य, आत्मा और ब्रह्म के मध्य एक सामंजस्य स्थापित करता है और इस तथ्य का ज्ञान मन्त्र में दिये गये आत्मा के प्रथम पाद की परिभाषा से ही हो जाता है। एक उपनिषद् के अनुसार (छान्दोग्य उपनिषद् : ५/१८/२) प्रथम पाद में वर्णित आत्मा के सप्तांग आधिदैविक आत्मा से सम्बद्ध हैं और उन्नीस मुख ब्रह्माण्ड (cosmos) से वियुक्त व्यक्ति (पिण्डात्मा) की चेष्टाओं के सामर्थ्य का संकेत देते हैं। विषय का एक पक्ष तो यह है कि जाग्रत चेतना केवल बाह्य विषयों के प्रति जागरूक है और जाग्रत जीवन में चेतना की प्रक्रिया का यह पक्ष व्यष्टि आत्मा और समष्टि आत्मा दोनों के लिए समान रूप से प्रयुक्त होता है। जीव और ईश्वर की यह साधारण परिभाषा है। हाँ, थोड़ा अन्तर अवश्य है जिसका निरूपण इन दोनों में हमें करना है। जीव यदि बाह्य जगत् के प्रति चैतन्य है, तो ईश्वर भी बाहर के जगत् के प्रति चैतन्य है; किन्तु दो पृथक् रूपों में। दोनों बहिष्प्रज्ञ हैं, बाह्य जगत् के प्रति चैतन्य हैं; किन्तु किंचिद् भेद के साथ। यह भेद उनकी प्रक्रिया में है। शीघ्र ही हम इस बिन्दु पर विचार करेंगे।

मुण्डकोपनिषद् में एक सुन्दर मन्त्र है, जिसमें सप्तांग का उल्लेख आता है :

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ
दिश: श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदा:।
वायु: प्राणो हृदयं विश्वमस्य
पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा॥
(२/१/४)

यह सर्वव्यापक परमात्मा है जो सब प्राणियों में विराजमान हैहृहृ‘**एष: सर्वभूतान्तरात्मा।**’ यह सर्वभूतान्तरात्मा कौन है? ‘**अग्निर्मूर्धा**’हृहृद्युलोक का देदीप्यमान आकाश जिसका मस्तक है। सृष्टि का सर्वोच्च स्थान जिसका मूर्धा है। ‘**चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ**’हृहृसूर्य और चन्द्रमा उसके नेत्र हैं। ‘**दिश: श्रोत्रे**’हृहृद्युलोक की दिशाएँ उसके कर्ण हैं, जिनसे वह श्रवण करता है। ‘**वाक् विवृताश्च वेदा:**’हृहृवेद उसकी वाणी हैं। ‘**वायु: प्राण:**’हृहृयह ब्रह्माण्डीय समस्त वायु उसका श्वास है। ‘**हृदयं विश्वमस्य**’हृहृसम्पूर्ण विश्व उसका हृदय है। ‘**पद्भ्यां पृथिवी**’हृहृधरती जिसके चरण हैं। यह उपनिषद् की जाग्रत अवस्था के अनुसार वैश्वानर है।

यही विराट् है अथवा विश्व पुरुष है, जिसका वेद के पुरुषसूक्त में स्तवन किया गया है। यही वह विराट् पुरुष है, जिसको अर्जुन ने देखा था और जिसका वर्णन भगवद्गीता के एकादश अध्याय में आता है। यही वह विराट् है, जिसकी अभिव्यक्ति श्री कृष्ण ने कौरवों की सभा में की थी, जब वे शान्ति का प्रस्ताव ले कर गये थे। यही वह विराट् है, जिसे यशोदा ने बाल-कृष्ण के मुख में देखा था। यह विश्व-पुरुष है, महापुरुष है, पुरुषोत्तम है, विराट्-पुरुष है। उसे वैश्वानर भी कहते हैं अथवा वह विश्व (समस्त) नर-रूप है। 'विश्व' ब्रह्माण्ड है और 'नर' पुरुष है। इसीलिए वह 'वैश्वानर' है; क्योंकि केवल वही एक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ब्रह्माण्डीय अथवा विश्व-पुरुष है, Cosmic Man है। पुरुष केवल एक ही है और वह यही है। यहाँ मीराबाई का स्मरण हो आता है, जिसने कभी कहा था कि 'पुरुष एक ही है'। संसार में 'नर' अनेक नहीं हैं। 'नर' केवल एक ही है और वह है 'वैश्वानर'।

यह विराट् पुरुष का वैश्विक निरूपण है। भौतिक जगत् में जीवन-संचार करने वाली परा-चेतना 'विराट्' नाम से अभिहित है। जिस प्रकार हमारा भौतिक शरीर चेतना से संचरित है, उसी प्रकार यह भौतिक जगत् परा-चेतना से अनुप्राणित है। यह विशाल ब्रह्माण्ड अपने सौर मण्डल, नक्षत्र मण्डल, आकाश गंगा और दिक्-काल-हेतुक नियमों सहित भौतिक जगत् है और यह किसी परा-चेतना से अनुप्राणित है—हमारे मर्त्य शरीरों की भाँति, जो चेतना से अनुप्राणित हैं। यह प्राणदायिनी चेतना अन्तर्यामी (परमात्मा) है, जो समस्त पदार्थों में अन्तरस्थ है, सब वस्तुओं के पार्श्व में निहित है, जड़-चेतन सबमें गोपनीय रूप से निहित है, विद्यमान है; इसीलिए उसे अन्तर्यामी कहा है।

इस विराट् पुरुष के लिए जीवित प्राणी और मृत पदार्थ में कोई अन्तर नहीं है। जड़ पदार्थ और चेतन प्राणी-जैसा कोई भेद नहीं है, जो कि वैज्ञानिक लोगों ने बना रखा है; क्योंकि निर्जीव तत्त्व, वनस्पति-जगत्, पशु-जगत् और मनुष्य-जगत् आदि के विविध प्रकार हम मनुष्यों द्वारा सत्य की अभिव्यक्ति के स्तरों के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। स्वयं विराट् के लिए ऐसा कोई भेद नहीं है। प्रकृति के तीन गुणों—सत्त्व, रजस् और तमस् के द्वारा वह सजीव और निर्जीव, सबमें विद्यमान है।

जब वह स्वयं की अभिव्यक्ति तमस् के माध्यम से करता है, उसे हम जड़ सत्ता कहते हैं। दृष्टान्त के रूप में—शिला, चट्टान आदि हमारे विचार में जड़ पदार्थ हैं, उनमें किसी प्रकार की जीवन्त चेतना प्रतिभाषित नहीं होती, पुनरपि वह विराट् पुरुष की ही अभिव्यक्ति है—प्रकृति के तमोगुण के माध्यम से; क्योंकि उस अभिव्यक्ति में तमस् प्रधान है और सत्त्व, रजस् गौण रूप से उसमें निहित हैं।

जब रजस् और सत्त्व धीरे-धीरे अधिकाधिक परिमाण में अभिव्यक्त होने लगते हैं अथवा विस्तृत होने लगते हैं, तो जीवसंचारण (animation) होता है, जीवन मन्दगति से अस्तित्व में विसर्पण करने लगता है और निर्जीव से हम सजीव की ओर, जड़ से चेतन की ओर आगे बढ़ते हैं।

संजीवनी शक्ति के रूप में समस्त जीवन्त प्राणियों में निहित जीवन की प्रथम अभिव्यक्ति है प्राण। पत्थर आदि जड़ पदार्थों में प्राण-संचार नहीं

होता; किन्तु वृक्ष-लताओं-पादपों में प्राण-संचार होता है। पेड़-पौधे चट्टान की भाँति निर्जीव नहीं होते, वे श्वास लेते हैं। किन्तु चिन्तन-प्रक्रिया सत्ता की उच्चतर अभिव्यक्ति में होती है। पेड़-पौधे पशुओं की भाँति सोच नहीं सकते। यह प्रक्रिया सहज, स्वाभाविक ज्ञान सहित पशु-जगत् में होती है।

अब सत्य की अभिव्यक्ति का एक और उच्चतर सोपान है, जिसमें मानवीय स्तर पर सत्त्व का सामीप्य होता है। यहाँ हम न केवल श्वास-प्रश्वास और चिन्तन की प्रक्रियाओं में ही संलग्न हैं, प्रत्युत अवबोध, युक्तियुक्त विचार और न्यायिक विवेकपूर्ण प्रक्रियाओं में संलग्न हैं। मन से पृथक् विज्ञान की यही दशा है। स्वाभाविक ज्ञान तक सीमित है पशु-जगत् और वनस्पति-जगत् प्राण तक सीमित है। जड़ पदार्थ तो मात्र अन्न तक ही सीमित हैं। मानवीय स्तर पर पहुँच कर हम जिस विज्ञान तक पहुँचे हैं, वह है सत्य के उद्घाटन का स्तर, जिसमें हम यह सोच सकते हैं कि यही सर्वस्व नहीं हैह्नह्न**'नेति-नेति'**।

अब इस विज्ञान से उत्कृष्टतर एक सोपान का हमें आरोहण करना है, जो इस विज्ञान और मानवह्नह्नदोनों से परे है और वह है आनन्द का धाम। इस प्रकार अन्न से हम प्राण, प्राण से मन, मन से विज्ञान और विज्ञान से आनन्द तक पहुँचे।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

ॐ

हमारे जीवन का इस भूतल पर एक विशेष अर्थ तथा गम्भीर महत्त्व है। इसकी महत्ता की स्पष्ट जानकारी के अभाव में आप सम्यक् तथा यथोचित जीवन यापन नहीं कर सकते। यदि आप अपने इस पार्थिव जीवन को सही दिशा देना चाहते हैं, तो आपको अपने महान् आदर्श, उद्देश्य तथा लक्ष्य का ज्ञान अतीव आवश्यक है। मनुष्य को यहाँ दिव्य जीवन यापन करने तथा इहलौकिक तथा पारलौकिक उत्कृष्ट आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने के लिए ही मानव-जन्म प्राप्त हुआ है। मानव-परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह एक और दिव्य योजना है।

जागिए! स्वप्न-पाश को विदीर्ण करके बाहर आइए। अपने जन्मसिद्ध अधिकार की माँग कीजिए। अपने सद्रूप को पहचानिए। यहीं और अभी अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान कर दैवी सुख, शान्ति और ज्ञान की अनुभूति में प्रवेश कीजिए, जो कि आपका नित्य स्वरूप है। **स्वामी चिदानन्द**

योग द्वारा स्वास्थ्य :

शीर्षासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

विधि

चौपरत कम्बल बिछा कर उसके सामने घुटनों के बल बैठ जायें। अपने हाथ की हथेलियों को चषकाकार बनाते हुए उँगलियों को गुम्फित करें। छोटी

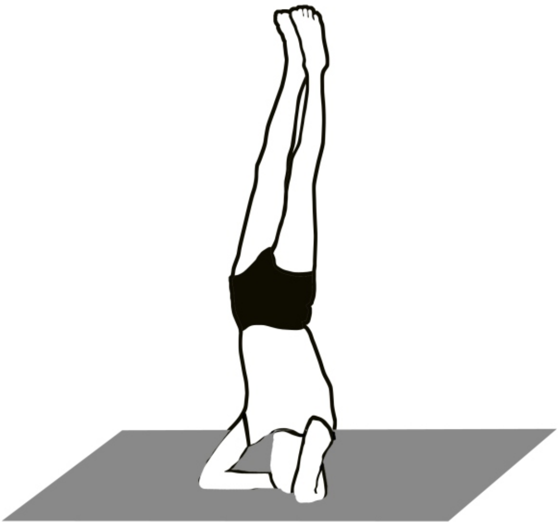

उँगलियों को ऐसा ठीक बैठायें कि दोनों हथेलियाँ कम्बल पर समान रूप से रह सकें। छोटी उँगलियों को कम्बल का स्पर्श कराते हुए हाथों को कम्बल पर रखें। अब कोहनियों को मिलाने वाली पंक्ति ही कम्बल पर हाथों की स्थिति द्वारा निर्मित त्रिभुज का आधार होगी। दोनों कोहनियों के मध्य का स्थान अपने वक्ष:स्थल की चौड़ाई के अन्दर ही होना चाहिए।

अब अपने शिर का शीर्ष भाग कम्बल पर रखें जिससे कि आपके शीर्ष का पश्च भाग चषकाकार हथेलियों को स्पर्श करे। घुटनों को भूमि से उठायें और फर्श पर पादांगुलियाँ रखे रहें। शिर की स्थिति दृढ़ रखते हुए पादांगुलियाँ और जाँघें शिर के पास लाते जायें। घुटनों को शरीर के पास ले आयें और धीमे से फर्श से अलग करके दोनों पैरों की उँगलियों को एक-साथ उठायें और कुछ क्षणों तक सन्तुलित रखने का प्रयत्न करें। जब सन्तुलन स्थिर हो जाये और रीढ़ सीधी तन जाये, तब घुटनों को सीधा कर दें और शिर नीचे तथा पैरों को ऊपर करते हुए, धीरे-धीरे पूरे शरीर को एक पंक्ति में लाते हुए दोनों पैरों को ऊपर फैला दें। जब इस आकृति में हों, तो नासिका से धीमी और गहरी श्वास-प्रश्वास लेने की प्रक्रिया करें तथा शिर के शीर्ष भाग पर अपना मन केन्द्रित करें। इस आकृति को बिना किसी कष्ट के जितनी देर तक बनाये रख सकें, बनाये रखें। १०-१५ सेकण्ड से प्रारम्भ करके अवधि को शनै:-शनै: तीन मिनट तक बढ़ायें।

धीरे-धीरे श्वास बाहर निकालें तथा पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए नीचे करें। घुटनों को धीरे-धीरे शरीर के पास आगे लायें और पादांगुलियों को फर्श का स्पर्श करने दें। फर्श पर पादांगुलियों सहित घुटने सीधे करें तथा रीढ़ की हड्डी सीधी करें। तब फर्श पर घुटनों को विश्राम करने दें और अपनी बँधी हुई, एक-दूसरे पर रखी हुई, मुट्ठियों पर मस्तक को रखते हुए आकृति को खोल दें। इस स्थिति में ३० सेकण्ड तक बने रहें और तब अपने पैरों पर (ताड़ासन) में ३०

सेकण्ड तक खड़े हों। इससे एकाएक शिर से रुधिर का उलटा प्रवाह होने में रोक लग जायेगी।

कुछ दिनों के अभ्यास के पश्चात् जब आपको सरलता एवं आराम अनुभव होने लगे, तब अपने शिर के शीर्ष भाग पर सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ चित्त एकाग्र करने का प्रयत्न करें।

इस आसन का अभ्यास व्यक्ति की क्षमता के अनुसार किया जा सकता है और दैनिक अभ्यास के लिए समय तीन मिनट से पाँच मिनट तक भिन्न-भिन्न हो सकता है।

नोट : प्रारम्भिक अभ्यासकर्ताओं को इस आसन पर अत्यधिक समय तक खड़े नहीं रहना चाहिए। शरीर को थकाने से बचें। जब आप किसी प्रकार की असुविधा (कष्ट) अनुभव करें, तो सामान्य स्थिति में वापस आ जायें और विश्राम करें। अभ्यास के समय घुटनों और अँगूठों को सीधे किन्तु विश्राम में रखते हुए मन-ही-मन (काल्पनिक) शरीर का अवलोकन करें। हाथों को इस प्रकार व्यवस्थित करें कि शरीर का समस्त भार शिर पर ही आधारित हो, न कि हाथों पर। प्रारम्भ में शिर में ताजे रुधिर का आकस्मिक भारी प्रवाह कुछ असामान्य अनुभूतियाँ उत्पन्न करा सकता है। इन पर आप शनै:-शनै: विजय प्राप्त कर लेंगे और तब आप आराम का अनुभव करेंगे। जैसे ही आप प्रवीणता प्राप्त करेंगे, आप शरीर को बहुत हलका और आराममय अनुभव करेंगे।

लाभ

शीर्षासन का नियमित अभ्यास ग्रीवा, उदर-प्राचीरों और जाँघों को पुष्ट और शक्तिशाली बनाता है। इससे पृष्ठवंश स्वस्थ और बलवान् बनता है। इस आसन के नियमित अभ्यास से सभी शारीरिक कोषों के माध्यम से, विशेषत: उन भागों में जो हृदय के ऊपर हैं, स्वस्थ और शुद्ध रक्त का समुचित प्रवाह निरापद होता है और इस प्रकार उन (हृदय के ऊपर वाले) भागों को नवजीवन प्राप्त होता है। विचार-शक्ति भी बढ़ जाती है और इससे विचार-समूह अधिक स्पष्ट हो जाते हैं। पीयूष (पिट्यूटरी) और शंकुरूप ग्रन्थियाँ समुचित रुधिर-पूर्ति पा जाती हैं जिससे सुस्वास्थ्य, शरीर का वर्धन और जीवन-शक्ति की निश्चित रूप से उन्नति होती है। यह आसन निद्राहीनता, स्मरणहीनता और शक्तिहीनता से पीड़ित व्यक्तियों के लिए विशेष लाभदायक है। इस आसन का उचित और सही अभ्यास अत्यधिक कर्म-शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करता है। फेफड़े जलवायु की दशाओं में परिवर्तनों का सामना करने की शक्ति को अर्जित कर लेते हैं। यह व्यक्ति को प्रतिश्याय, खाँसी, तुण्डिका-शोथ, दुर्गन्धयुक्त श्वास, हृदय की धड़कन आदि से मुक्त करता है। यह शारीरिक तापमान को ठीक करता है, कोष्ठबद्धता हटाता है और रुधिर-तत्त्वों को स्वस्थ करता है। नियमित और सही अभ्यास मन और शरीर का उचित तथा निर्दोष विकास भी निश्चित करता है। एकाग्रता की शक्ति भी बढ़ जाती है।

चेतावनी : उच्च एवं निम्न रक्तचाप, हृदय-रोगों, कर्ण-पूय, विस्थापित चक्षु-पटल अथवा अन्य पुराने नेत्र-रोगों से ग्रस्त रोगियों को यह आसन नहीं करना चाहिए। पन्दरह वर्ष से कम आयु के बालकों को भी इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

बाल-स्तम्भ

वह भिखारी

स्वामी रामराज्यम्

एक था भिखारी। एक दिन एक गाँव से भीख माँग कर वह अपनी झोपड़ी पर वापस जा रहा था। उसे रास्ते में एक पोटली पड़ी हुई मिली। उसने झुक कर पोटली उठा ली और उसे खोल डाला। पोटली में पाँच-पाँच सौ रुपये के कुछ नोट थे। कुछ देर तक पोटली हाथ में लिये हुए वह सोचता रहा ह्नह्नक्या इसे झोपड़ी में ले जाऊँ? जाड़ा आ गया है, एक कम्बल खरीद लूँगा, एक स्वेटर भी खरीद लूँगा। फिर उसके मन में एक दूसरा विचार उठाह्नह्नयह धन उसके मालिक को मिलना चाहिए, तभी मेरा मालिक मुझसे खुश होगा। इस पर मेरा हक ही क्या है?

कुछ देर तक वह सोच-विचार में डूबा रहा। फिर उसने यह निश्चय किया कि जिस रास्ते से वह आया है, उसी रास्ते से वापस लौटेगा। शायद उसे थैली का मालिक थैली ढूँढ़ता हुआ मिल जाये।

वह वापस लौटा। जिसे उसकी आँखें ढूँढ़ रही थीं, वह नहीं मिला। तब वह गाँव-प्रधान के पास गया, उसे पूरी बात बतायी और पोटली उसे सौंप दी। फिर वह अपनी झोपड़ी में आ गया। वह सोचने लगाह्नह्नपोटली का धन अपने पास रख लेता, तो न जाने कौन-कौन सी मुसीबतें आ जातीं। कौन जाने, पोटली का मालिक पुलिस ले कर उसकी झोपड़ी में आ धमकता और न जाने क्या-क्या हो जाता!

शाम हो रही थी। ठण्ढ बढ़ने लगी। उसका मन हुआ कि कुछ और पहन ले, कुछ ओढ़ ले। उसने उदास आँखों से झोपड़ी के फरश की ओर देखाह्नह्नवहाँ फटे-पुराने टाट का एक टुकड़ा पड़ा हुआ था। रात के समय वह उसके आधे हिस्से पर लेट कर उसके बचे हुए हिस्से से अपने शरीर को ढक लिया करता था। वह बुदबुदायाह्नह्नजाड़ा कैसे कटेगा? उसने आँखें बन्द कर लीं। उसकी बन्द आँखोंह्नके सामने एक चित्र उभराह्नह्नएक दुकानदार उसे कागज में लिपटा हुआ एक बण्डल पकड़ा रहा है और वह उसे पाँच सौ रुपये का एक नोट थमा रहा है।

वह चौंक गया। उसने अपने दोनों हाथों से अपने कान पकड़ लिये। वह फिर बुदबुदायाह्नह्ननहीं, नहीं। बेईमानी करने से तो ठण्ढ में मर जाना अच्छा है।

तभी गाँव का एक आदमी उसे झोपड़ी की ओर आता हुआ दिखायी पड़ा। उसने सोचाह्नह्नवह ही मालिक होगा पोटली का, शक में मुझसे पूछताछ करने आ रहा होगा। नहीं तो कौन आता है इस झोपड़ी में!

वह आँखें बन्द करके भगवान् का नाम लेने लगा। थोड़ी देर बाद उसे झोपड़ी के निकट किसी के आने की आहट सुनायी पड़ी। घबड़ा कर उसने आँखें खोल दीं। वही आदमी झोपड़ी के द्वार पर खड़ा था। बोलाह्नह्न''मेरा धन मुझे वापस मिल गया। मैं मेले में बैल बेच कर लौट रहा था। रुपयों की पोटली मेरे झोले में थी। मुझे पता ही नहीं चल पाया कि वह कब गिर गयी। मैं घर से तुम्हारे लिए दो चीजें लाया हूँ। जाड़ा आ रहा है, मैंने सोचा, तुम्हें एक कम्बल और स्वेटर दे दूँ।'' यह कह कर उसने वे दोनों चीजें भिखारी को पकड़ायीं और चला गया।

भिखारी का मन बल्लियों उछलने लगा। उसकी आँखों से प्रसन्नता के आँसू गिरने लगे। भगवान् ने उसकी मुँह-माँगी मुराद पूरी कर दी थी। उसने मिट्टी का दिया जलाया। दीये से कोने में रखी एक टूटी-फूटी मूर्ति की आरती उतारने लगा। फिर दीया नीचे रख कर वह मूर्ति से रोते हुए बोलाह्नह्न''मालिक, तुम सबकी सुनते हो, तुमने मेरी भी सुन ली। बलिहारी है, बलिहारी है।'' इसके बाद वह ताली बजा-बजा कर गाने लगाह्नह्न''मेरे मालिक, मेरे मालिक।''

□ □ □

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' में सेवा

लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय निरन्तर सेवा करता आ रहा है। 'होम' एक चिकित्सा केन्द्र है, जिसमें जीर्ण शारीरिक-मानसिक रोगों से ग्रस्त होने के कारण सगे-सम्बन्धियों द्वारा परित्यक्त व्यक्तियों के लिए घर-जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

बहुधा शारीरिक बीमारी मनोविकृति के कारण बढ़ जाती है। विशेषकर ऐसा तब होता है, जब व्यक्ति के पास इलाज के लिए कोई साधन नहीं होता है। सहन करने के अतिरिक्त वह करे ही क्या! सहन करते-करते सहन करने की सीमा भी पीछे छूट जाती है। ऐसा ही 'होम' के एक अन्तरंग रोगी पर भी बीता। वह अपने ही मल-मूत्र से सना हुआ एक नाली में पड़ा था। उसके घावों में कीड़े पड़े हुए थे। उसके काले पड़ गये शरीर पर सब जगह कीड़े रेंग रहे थे।

इसी तरह एक महिला रोगी जो फेफड़े की टी. बी. (क्षयरोग) से पीड़ित थी तथा जिसका वजन केवल २६ किलो था, अब इलाज से धीरे-धीरे ठीक हो रही है। उसे उचित आहार दिया जा रहा है। अन्य रोगियों को उनका उपचार करने के बाद छुट्टी दे दी गयी है।

डाक्टर, रोगी और दवा में प्रतिष्ठापित परमात्मा ही अपने इन बच्चों के दु:ख-दर्द को समझता है। सभी पर उसकी दया-दृष्टि रहती है। दु:खों की अँधेरी सुरंग के द्वार पर सदा चमकते हुए प्रकाश के समान है वह। गहन एकाकीपन तथा निराशा के क्षणों में वह हाथ फैलाये हुए अपने आलिंगन में लेने के लिए हमें अपनी ओर बुलाता रहता है।

''...आश्रम में प्रात:काल सूर्यनारायण की प्रथम किरणें फैलीं। चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। राव स्वामी जी अभी तक आश्रम में नहीं दिखायी दिये। आश्रम के प्रत्येक व्यक्ति ने चिन्तित हो कर उन्हें खोजना शुरू कर दिया। अचानक उन्हें आश्रम के आफिस के सामने एक कुत्ता लेटा हुआ दिखायी दिया। उसके शरीर में बहुत से घाव हो गये थे। उनमें कीड़े पड़ गये थे। पर किसी ने उन घावों में मरहम लगा कर सावधानीपूर्वक उसकी मरहम-पट्टी कर दी थी। राव स्वामी जी इसी कुत्ते के पास सोये हुए थे। करुणा की साक्षात् मूर्ति स्वामी जी ने इस कुत्ते की सेवा-शुश्रूषा में अपने अमूल्य जीवन के दो महीने व्यतीत किये।''

('अमृत-पुत्र' पुस्तक से उद्धृत)

''भूखों को भोजन दें! नंगों को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' स्वामी शिवानन्द

परम पूजनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का जन्म-जयन्ती महोत्सव

दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पूजनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज (जो अपने जीवन के ९१ वसन्त देख चुके हैं) का जन्म-दिवस उत्साह तथा एकनिष्ठा के साथ २४ सितम्बर २००७ को मनाया गया। प्रात:कालीन सामूहिक प्रार्थना-ध्यान से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात् उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा पूज्य श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने पूजनीय स्वामी जी महाराज के जीवन और उपदेशों पर प्रकाश डाला। आश्रम के भक्तों के द्वारा नगर-संकीर्तन का भी आयोजन किया गया। विश्व-कल्याण के लिए यज्ञशाला में हवन किया गया। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पवित्र पादुकाओं की पूजा (अभिषेक, पुष्प-अर्चना आदि) भी सम्पन्न हुई। पूजा के पश्चात् परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, प्रोफेसर वासुदेव रणदेव जी और प्रोफेसर वेदप्रकाश ग्रोवर जी ने परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के जीवन तथा उपदेशों के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की। उन्होंने परम पूजनीय स्वामी जी महाराज से जुड़ी हुई अपने जीवन की स्मरणीय घटनाओं का उल्लेख भी किया। सन्ध्याकाल में माँ गंगा की पूजा तथा विशेष आरती की गयी। रात्रिकालीन सत्संग कार्यक्रम में प्रार्थनाएँ, भजन तथा कीर्तन प्रस्तुत किये गये। श्री रामनिवास गुप्ता जी, श्री पी. सी. जेना जी, श्री चार्ल्स कंगाई तथा श्री ओमार मंसूर ने प्रवचन दिये।

मुख्यालय में नवरात्र महोत्सव

पावन नवरात्र के शुभ अवसर पर दिव्य जीवन संघ के मुख्यालय में १२ अक्तूबर से २० अक्तूबर तक देवी की विधिवत् पूजा की गयी।

देवी त्रिरूपेश्वर की जीवन्त प्रकटीकरण हैं। देवी को पराशक्ति या आदिशक्ति भी कहा जाता है। पराशक्ति के तीन पक्ष हैंह्नह्नदुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती। पराशक्ति समग्र सृष्टि की अवतार हैं। वह ही समग्र ब्रह्माण्ड की भिन्न-भिन्न सृष्टियों का उद्गम तथा निष्पत्ति हैं।

परम्परा के अनुरूप नवरात्र की प्रथम तीन रात्रियों में आदिशक्ति की दुर्गा रूप में पूजा की जाती है ताकि मानव के अनिष्टकर स्वभाव का नाश हो सके तथा भ्रमित आत्माएँ अज्ञानान्धकार से मुक्ति पा सकें। अगली तीन रात्रियों में पराशक्ति के लक्ष्मी रूप की पूजा करके सांसारिक-आध्यात्मिक उन्नति के लिए उनकी कृपा की याचना की गयी। अन्तिम तीन रात्रियों में पराशक्ति के विद्या रूप की पूजा सम्पन्न हुई और उनसे प्रज्ञान-धन और मोक्ष की याचना की गयी।

इस वर्ष यह पूजा तोरण, पुष्पों तथा बिजली की रंग-बिरंगी बत्तियों से सुसज्जित नवनिर्मित शिवानन्द आडिटोरियम में सम्पन्न की गयी।

इस कार्यक्रम में प्रतिदिन दैनिक प्रार्थना-भजन के अतिरिक्त माता पराशक्ति के भक्ति-भाव-पूर्ण गीत गाये गये, विश्व-शान्ति के लिए देवी का मन्त्र-जप किया गया और 'देवी-माहात्म्य' का पाठ किया गया। 'दुर्गासप्तशती' (मूल) का भी पाठ किया गया। 'अष्टोत्तरशतनामावली' के उच्चारण के साथ माता पराशक्ति की पुष्पार्चना की गयी। समापन दिवस को एक सामूहिक प्रार्थना-सभा में माता पराशक्ति की कृपा की याचना की गयी। पारम्परिक ढंग से उनकी पूजा करने के तुरन्त बाद कन्या-पूजा (कुमारी-पूजा) की गयी। अन्त में प्रसाद का वितरण किया गया।

२१ अक्तूबर को अनिष्टकर शक्तियों पर विजय तथा विद्यारम्भ का प्रतीक विजयादशमी का पर्व मनाया गया। इस अवसर पर पर वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, भागवत और पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'साधना' के महत्त्वपूर्ण अंशों का पाठ किया गया। वरिष्ठ स्वामी गण ने एकत्र भक्तों को आशीर्वाद दिये। सन्ध्याकाल में माँ गंगा की पूजा-आरती की गयी।

इस महोत्सव में आश्रम के अन्तेवासियों, अतिथियों, स्थानीय निवासियों तथा योग-वेदान्त अरण्य अकादमी के अध्यापकों-छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समग्र दश दिवसों तक आश्रम का वातावरण भक्ति-भाव से परिपूरित रहा।

पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

गुजरात प्रदेश की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के निमन्त्रण के उत्तर में पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज के साथ २३ सितम्बर से २ अक्तूबर २००७ तक एक सांस्कृतिक यात्रा की। वडोदरा की दिव्य जीवन संघ शाखा द्वारा विश्व-शान्ति के उद्देश्य से आयोजित १०० घण्टों के अखण्ड महामृत्युंजय मन्त्र जप-यज्ञ (जिसका

समापन २४ सितम्बर को १२ बजे दिन में हुआ) में पूज्य स्वामी जी ने भाग लिया। शाखा परिसर में वडोदरा शाखा द्वारा २३ सितम्बर २००७ की सन्ध्या में आयोजित सत्संग कार्यक्रम में स्वामी जी ने 'साधना' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। अपने-अपने अध्ययन-क्षेत्रों में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले कुछ विद्यार्थियों में स्वामी जी ने छात्र वृत्तियाँ वितरित कीं। ५०० अन्तरंग रोगियों तथा १०० बच्चों वाले और चिकित्सालय की सुविधाएँ प्रदान करने वाले Sindhrot (वडोदरा) स्थित श्रम मन्दिर (जो कुष्ठरोग का पता लगाने वाला एक पुनर्वास केन्द्र है) में स्वामी जी २३ सितम्बर २००७ को गये और वहाँ अन्तेवासियों तथा कार्यकर्ताओं के साथ सत्संग में आध्यात्मिक चर्चा की।

२४ सितम्बर को शाखा के सत्संग कक्ष में परम पूजनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ९१ वें जन्म-दिवस के अवसर पर एक भव्य पादुका-पूजा आयोजित की गयी। श्री स्वामी जी ने अन्य भक्तों के साथ इस पूजा में भाग लिया। अखण्ड महामृत्युंजय मन्त्र जप की पूर्णाहुति के पश्चात् श्री स्वामी जी ने संक्षिप्त आध्यात्मिक चर्चा की।

बड़ौदा हाई स्कूल, अलकापुरी, वडोदरा के न्यासियों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने पूज्य स्वामी जी से विद्यार्थियों को सम्बोधित करने का आग्रह किया। स्वामी जी ने चरित्र तथा नैतिकता के महत्त्व पर भाषण दिया, जिसे छात्रों ने बहुत पसन्द किया। भाषण के बाद प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया। २४ सितम्बर की शाम को स्वामी जी ने शाखा द्वारा बड़ौदा हाई स्कूल सभा भवन में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में भाषण दिया। इस भाषण का विषय थाह्न'श्रीमद्भागवतपुराण का सारतत्त्व'।

२७ सितम्बर को स्वामी जी जामनगर की दिव्य जीवन संघ शाखा गये तथा उन्होंने शाखा के प्रतिनिधियों से अनौपचारिक भेंट की। भीडभंजन महादेव नामक स्थान में शाखा ने एक सार्वजनिक सभा आयोजित की। इस सभा में स्वामी जी ने 'सुखी जीवन के लिए आध्यात्मिक स्वास्थ्य' विषय पर भाषण दिया। स्वामी जी ने श्री भास्कर भाई बक्शी से उनके निवास-स्थान पर भेंट की तथा वहीं एक पारिवारिक सत्संग कार्यक्रम में भी भाग लिया (श्री बक्शी परम पूजनीय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के एक वृद्ध शिष्य हैं)।

२८ सितम्बर २००७ को स्वामी जी सुरेन्द्रनगर की शाखा गये। स्वामी जी ने शाखा-प्रतिनिधियों के साथ हटकेश्वर महादेव स्थित शाखा-कार्यालय में सत्संग किया। शाखा द्वारा कोठारी बाल मन्दिर हाल में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में स्वामी जी ने 'भक्तियोग' विषय पर भाषण दिया।

२९ सितम्बर २००७ को स्वामी जी गान्धीनगर की दिव्य जीवन संघ शाखा में पधारे। शाखा द्वारा इंजीनियरिंग स्टाफ ट्रेनिंग कालेज के सभा भवन में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में स्वामी जी ने 'श्री स्वामी शिवानन्द का दिव्य मिशन तथा उनका सन्देश' विषय पर भाषण दिया।

गुजरात की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के सहयोग से वडोदरा की दिव्य जीवन संघ शाखा ने नर्मदा नदी के तट पर स्थित करनाली नामक एक छोटे-से उपग्राम के 'गीता मन्दिर' में ३० सितम्बर से २ अक्तूबर २००७ तक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने ब्राह्ममुहूर्त ध्यान-सत्रों तथा योग कक्षाओं का संचालन किया। १ अक्तूबर को नौका-संकीर्तन आयोजित किया गया। पारम्परिक ढंग से नर्मदा नदी की पूजा भी की गयी। शिविर-प्रतिभागियों ने पवित्र नर्मदा में स्नान किया।

श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने इस शिविर के पूर्वाह्न सत्रों में 'भगवद्गीता का दर्शन' विषय पर तथा अपराह्न सत्रों में 'भक्तियोग' विषय पर भाषण दिये। श्री स्वामिनी स्वरूपानन्द जी ने श्री शंकराचार्य द्वारा विरचित 'शतपदी' पर भाषण दिये। श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने 'साधना' विषय पर भाषण दिये। इस शिविर में गुजरात की सभी शाखाओं ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों से विभिन्न शाखाएँ एक-दूसरे के निकट आ सकीं तथा प्रतिभागी गण भी प्रवचनों तथा सत्संग से लाभान्वित हुए।

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज का यात्रा-कार्यक्रम

१. २२ से ३० नवम्बर २००७ तक . . . . सुरेन्द्रनगर (गुजरात)
२. १ से ७ दिसम्बर २००७ तक . . . . महेसाणा (गुजरात)
३. ९ से १६ दिसम्बर २००७ तक. . . . . मलाड, मुम्बई (महाराष्ट्र)
४. १८ से २६ दिसम्बर २००७ तक . . . . जामनगर (गुजरात)
५. २८ से ३० दिसम्बर २००७ तक . . . . बेंगुलूरु (कर्नाटक)
६. १ से ८ जनवरी २००८ तक. . . . . गान्धीनगर (गुजरात)
७. १० से १४ जनवरी २००८ तक . . . . गुमरगुंडा (छत्तीसगढ़)

सूचना

३४ वाँ अखिल आन्ध्र दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

३४ वाँ अखिल आन्ध्र दिव्य जीवन संघ सम्मेलन भगवान् वेंकटेश्वर के श्रीचरणों के निकट पवित्र तिरुमला हिल्स में स्थित आस्थान मण्डपम् में २९ जनवरी से ३१ जनवरी २००८ तक आयोजित किया जायेगा। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए पंजीकरण-शुल्क ११ रुपये है। शुल्क निम्नांकित पतों पर भेजा जा सकता है। इन पतों पर पत्र-व्यवहार करके सम्मेलन की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है :

Sri Swami Satyavratananda, The Divine Life Society Branch, Sri Sivananda Ashram, 6-1-110, Padmarao Nagar, Secunderabad—500 025, A.P., Phone: 040-27503274/27506782

Ch. Venkataseshaiah, President, The Divine Life Society Branch, “Gnana Deep”, Nehru Nagar, Gudur—524 101, Nellore Distt., A.P., Mobile: 99089 07779

Swami Ramayogi, Sri Sivananda Dharma Kshetram, Layidam—532 168, Via-Ponduru, Srikakulam Distt., A.P., Mobile: 99898 46137

हम सभी भक्तों को इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

भारतीय विद्या भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ २००८

पाठकों को सूचित किया जाता है कि भारतीय विद्या भवन अन्य प्रतियोगिताओं के साथ-साथ श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की स्मृति में एक वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इसका विवरण इस प्रकार है :

भवन की श्री स्वामी शिवानन्द स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता २००८

विषयह्लह्ल**सामाजिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्थान**

आयु-सीमाह्लह्ल२० से ३० वर्ष; पुरस्कारह्लह्ल रु.१०००, रु.७००, रु.३००

माध्यमह्लह्ल**हिन्दी**

आवेदन-पत्र की अन्तिम तिथिह्लह्ल**३१ जनवरी २००८**

आवश्यक शर्तें

१. सीमा : २००० शब्द। निबन्ध की दो टाइप की हुई प्रतियाँ।

२. भाग लेने वाले प्रतियोगी का पूरा नाम, घर का पता, आयु का प्रमाण-पत्र, फोटो (छोटी), दूरभाष नं./फैक्स नं./ई-मेल पता।

३. पुरस्कार-विजेता आगामी तीन वर्षों तक इस प्रतियोगिता में पुनः भाग नहीं ले सकता।

४. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा।

५. पत्र-व्यवहार के लिए पताह्लह्लप्रो. एस. ए. उपाध्याय, प्रोजेक्ट अधिकारी, भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ, भारतीय विद्या भवन, कुलपति मुंशी मार्ग, चौपाटी, मुम्बईह्लह्ल४०० ००७

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज का यात्रा-कार्यक्रम

१. २२ से ३० नवम्बर २००७ तक	सुरेन्द्रनगर (गुजरात)
२. १ से ७ दिसम्बर २००७ तक	महेशाणा (गुजरात)
३. ९ से १६ दिसम्बर २००७ तक	मलाड (महाराष्ट्र)
४. १८ से २६ दिसम्बर २००७ तक	जामनगर (गुजरात)
५. २८ से ३० दिसम्बर २००७ तक	बेंगुलूरु (कर्नाटक)
६. १ से ८ जनवरी २००८ तक	गान्धीनगर (गुजरात)
७. १० से १४ जनवरी २००८ तक	गुमरगुंडा (छत्तीसगढ़)

हिन्दी में उपलब्ध दिव्य जीवन संघ की कुछ पुस्तकें

HC47 साधना-सार इस पुस्तक की विषय-सामग्री साधकों को जागरूक बनाती है, उनकी साधाना को यन्त्रवत् होने से बचाती है तथा साधना से सम्बन्धित सामान्य-सी प्रतीत होने वाली समस्याओं के प्रति उनका ध्यान आकर्षित करती है।

पृष्ठ ; रु.००/-

HO23 जीवन-स्रोत डा. शरच्चन्द्र बेहेरा जी द्वारा रचित इस पुस्तक में महान् प्रबोधक तथा दलितों के मित्र आदर्श सन्त श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का विशद जीवन-वृत्ति प्रस्तुत किया गया है।

पृष्ठ ; रु.००/-

HS 014 कर्म और रोग प्रत्येक कार्य का परिणाम होता है और कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता। इस पुस्तक में हमारे द्वारा किये गये कर्मों तथा उनके फलस्वरूप भोगे जाने वाले रोगों का विवरण है।

पृष्ठ ; रु.००/-

HS72 घर की सरल औषधियाँ यह पुस्तक बिना किसी अपवाद के, हर एक के पास निश्चित रूप से, हर आवश्यकता के समय पास रखने योग्य है। जो दैनिक जीवन में शीघ्र ही बीमारी में उलझ जाते हैं, जिन्हें सरलता से हर स्थान में उपलब्ध हो सकने वाली प्राकृतिक और सरल औषधियों की आवश्यकता रहती है, उन सबके लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और अति-आवश्यक है। **पृष्ठ ; रु.००/-**

HC39 शाश्वत सन्देश परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा समय-समय पर साधकों को दये गये बहुमूल्य परामर्शों तथा सन्देशों को इस पुस्तक में पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने संकलित किया है। दिव्य जीवन, भगवत्स्मरण, गृहस्थों के लिए परामर्श और जप जैसे विषयों पर संकलित इस पुस्तक की सामग्री साधक-पाठकों के लिए निःसन्देह उपयोगी सिद्ध होगी। **(मुद्रणाधीन)**